पॉप के बादशाह की बायोपिक 'माइकल' में नजर आएंगे

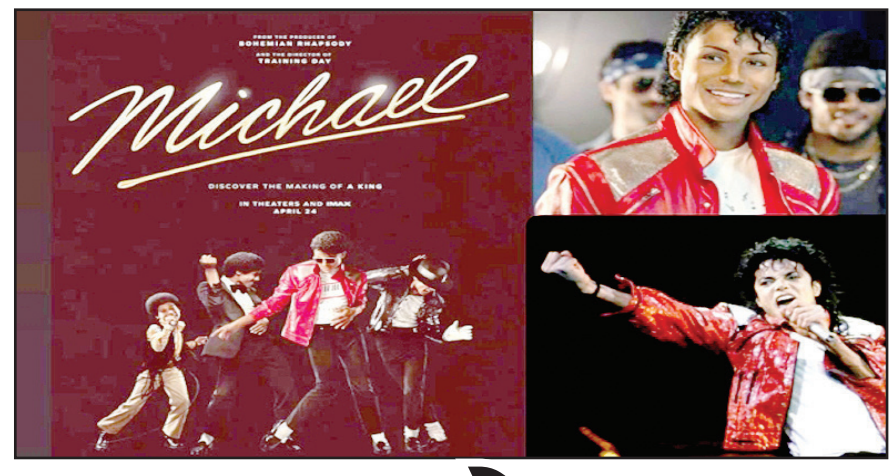

उनके भतीजे जाफर जैक्सन

माइकल जैक्सन को दुनिया भर में 'पॉप का बादशाह' कहा जाता है। उन्होंने संगीत, नृत्य और मनोरंजन की दुनिया में ऐसा क्रांतिकारी योगदान दिया, जिसे नई परिभाषा देने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। उनके आइकॉनिक एल्बम- 'थ्रिलर', 'बैड' और 'डेंजरस' ने पॉप संगीत के इतिहास की दिशा बदल दी। उनकी विशिष्ट कलात्मकता, रिदमिक संगीत, नवोन्मेषी वीडियो और मूनवॉक जैसा दिग्गज डांस मूव पॉप संस्कृति को नई ऊंचाई तक ले गए। इसी महान कलाकार की जिंदगी पर आधारित बायोपिक 'माइकल' का टीजर हाल ही में जारी किया गया है। 6 नवंबर को जारी किए गए इस एक मिनट के टीजर में माइकल जैक्सन का किरदार उनके सगे भतीजे जाफर जैक्सन निभाते नजर आ रहे हैं। फिल्म में कोलमैन डोमिंगो, निया लॉन्ग और माइल्स टेलर जैसे प्रसिद्ध कलाकार भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में दिखाई देंगे।

टीजर में माइकल की दुनिया की झलक

टीजर की शुरुआत स्टूडियो में जाफर जैक्सन द्वारा निभाए गए माइकल के किरदार से होती है, जहां वे हेडफोन लगाकर रिकॉर्डिंग की तैयारी करते दिखते हैं। इसके बाद स्टूडियो से सीधे दृश्य एक भरे हुए स्टेडियम पर कट होते हैं, जहां माइकल की लोकप्रियता की भव्य झलक दिखाई देती है। एक मिनट के टीजर में माइकल की दुनिया की झलक नजर आई। टीजर में माइकल के पेट के हिस्से के क्लोज़-अप शॉट्स और एक बोर्ड पर चिपके नोट्स नज़र आते हैं, जिन पर 'Beat It' और 'Billie Jean' लिखा है। गौरतलब है कि 1983 में रिलीज हुआ 'Beat It' माइकल जैक्सन की डिस्कोग्राफी में एक ऐतिहासिक पड़ाव माना जाता है। इसने उन्हें वैश्विक सितारा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और 80 के दशक के संगीत का चेहरा बदल दिया। इसी दौरान टीजर में यह भी दिखाया गया है कि कैसे जाफर जैक्सन मंच पर माइकल जैसी जादुई नृत्य ऊर्जा के साथ परफॉर्म करते हैं और उनकी आवाज भी एक पल को दर्शकों को भ्रमित कर देती है कि यह माइकल ही हैं। जाफर की अदाकारी देखकर फैंस हैरान हैं और लगातार इसकी तारीफ कर रहे हैं। एक यूजर ने कमेंट किया- "इस ट्रेलर को ऑस्कर मिलना चाहिए।" दूसरे ने लिखा- "जाफर को माइकल का किरदार निभाते देख बेहद खुशी हो रही है। इस फिल्म से बहुत उम्मीदें हैं।" तीसरे ने कहा- "उनकी आवाज बिल्कुल अपने चाचा जैसी है।"

अगले साल अप्रैल में रिलीज होगी फिल्म

यह फिल्म दुनिया के सबसे लोकप्रिय और रहस्यमय कलाकारों में से एक की जिंदगी के उन पहलुओं को सामने लाने का वादा करती है, जिन्हें कम लोगों ने जाना है। यह बताएगी कि माइकल जैक्सन कैसे एक अद्वितीय परफॉर्मर बने और उनकी प्रसिद्धि के पीछे कितनी मेहनत और संघर्ष छिपा था। फिल्म 24 अप्रैल 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

ईरान की निडर आवाज़
एक्ट्रेस तारानेह अलीदूस्ती

तारानेह अलीदूस्ती, एक ऐसा नाम है, जो ईरानी सिनेमा के साथ-साथ वहां के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य में भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 12 जनवरी 1984 को तेहरान में जन्मी तारानेह एक अभिनेत्री और सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने अपनी कला और साहस दोनों से दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा है।

अभिनय की शुरुआत और ऑस्कर तक का सफर

अलीदूस्ती ने बहुत कम उम्र में ही अभिनय की दुनिया में कदम रख दिया था। 17 साल की उम्र में उनकी पहली फिल्म 'आई एम तारानेह, 15' (2002) रिलीज हुई, जिसमें उनके अभिनय को खूब सराहा गया और उन्होंने कई पुरस्कार जीते। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनकी सबसे बड़ी अंतर्राष्ट्रीय सफलता 2016 में आई फिल्म 'द सेल्समैन' थी, जिसे असगर फरहादी ने निर्देशित किया था। इस फिल्म ने 89 वें अकादमी पुरस्कारों (ऑस्कर) में सर्वश्रेष्ठ विदेशी भाषा की फिल्म का पुरस्कार जीता। इस फिल्म के माध्यम से उन्हें वैश्विक पहचान मिली। हालांकि उन्होंने तत्कालीन अमेरिकी यात्रा प्रतिबंधों के विरोध में ऑस्कर समारोह का बहिष्कार किया था, जो उनके राजनीतिक रुख का पहला बड़ा संकेत था।

सामाजिक सक्रियता और जेल यात्रा

तारानेह अलीदूस्ती की प्रसिद्धि सिर्फ उनके अभिनय तक ही सीमित नहीं है। वह ईरान में महिलाओं के अधिकारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की एक मुखर समर्थक रही हैं। 2022 में महसा अमीनी की मौत के बाद ईरान में हुए राष्ट्रव्यापी प्रदर्शनों के दौरान, वह प्रदर्शनकारियों के समर्थन में खुलकर सामने आईं। दिसंबर 2022 में, उन्होंने सोशल मीडिया पर हिजाब के बिना अपनी एक तस्वीर पोस्ट की, जिसमें उन्होंने प्रदर्शनकारियों के समर्थन में एक बैनर पकड़ा हुआ था। इस साहसिक कदम के बाद ईरानी अधिकारियों ने उन्हें 'झूठ फैलाने' और 'देश विरोधी प्रचार' के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। 18 दिनों तक जेल में रहने के बाद, उन्हें जनवरी 2023 में जमानत पर रिहा कर दिया गया। उनकी गिरफ्तारी ने दुनियाभर में मानवाधिकार संगठनों का ध्यान खींचा और उनकी रिहाई के लिए व्यापक अभियान चलाए गए।

एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व

तारानेह अलीदूस्ती आज सिर्फ एक ऑस्कर विजेता अभिनेत्री नहीं हैं, बल्कि वह ईरान में बदलाव की एक प्रतीक बन गई हैं। उन्होंने साबित कर दिया है कि कला और सामाजिक जिम्मेदारी एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। उनका जीवन और संघर्ष उन सभी लोगों के लिए एक प्रेरणा है, जो दमनकारी व्यवस्था के खिलाफ खड़े होने का साहस करते हैं।

मॉडल आफ द वीक

नाम: चिंकी सिंह

टाउन: कानपुर

एजूकेशन: स्नातक की पढ़ाई जारी

अचीवमेंट: शान-ए-कानपुर का खिताब

ड्रीम: प्रोफेशनल मॉडलिंग, एक्टर

जिंदगी का सफर

क्लासिक वहीदा

वहीदा रहमान भारतीय सिनेमा की महत्वपूर्ण अभिनेत्री हैं, जिन्हें उनकी सुंदरता, गरिमा और अभिनय क्षमता के लिए जाना जाता है। वहीदा रहमान का जन्म 3 फरवरी 1938 को तमिलनाडु के चेंगलपट्टू में एक तमिल मुस्लिम परिवार में हुआ था। वह बचपन से ही एक प्रशिक्षित भरतनाट्यम नर्तकी थीं। अपने परिवार की आर्थिक मदद के लिए, उन्होंने डॉक्टर बनने का अपना सपना छोड़ और फिल्मों में प्रवेश किया। उन्होंने सबसे पहले तेलुगु और तमिल फिल्मों में काम करना शुरू किया।

उनकी प्रतिभा को हिंदी सिनेमा में फिल्म निर्माता गुरु दत्त ने पहचाना, जिन्होंने उन्हें अपनी फिल्म 'सी.आई.डी.' (1956) से हिंदी फिल्मों में लॉन्च किया। गुरु दत्त के साथ उनकी साझेदारी ने भारतीय सिनेमा को कई क्लासिक फिल्में दीं, जिनमें 'प्यासा' (1957), 'कागज के फूल' (1959) और 'साहिब बीबी और गुलाम' (1962) शामिल हैं।

1960 के दशक के मध्य में वहीदा रहमान ने शीर्ष अभिनेत्री के रूप में अपनी जगह बनाई। उनकी सबसे यादगार भूमिकाओं में से एक 'गाइड' (1965) में 'रोजी' की थी, जिसने उन्हें व्यापक पहचान और पहला फिल्मफेयर पुरस्कार दिलाया। इसके बाद, उन्होंने 'तीसरी कसम' (1966), 'नील कमल' (1968) और 'खामोशी' (1969) जैसी कई सफल फिल्में दीं।

1974 में अभिनेता शशि रेखी (कमलजीत) से शादी करने के बाद, उन्होंने अभिनय से ब्रेक ले लिया और बंगलुरु चली गईं। 2000 में अपने पति की मृत्यु के बाद, वह मुंबई लौट आईं और सहायक भूमिकाओं में वापसी की। उन्होंने 'वाटर' (2005), 'रंग दे बसंती' (2006) और 'दिल्ली 6' (2009) जैसी फिल्मों में काम किया। भारतीय सिनेमा में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें कई पुरस्कारों से नवाजा गया है। उन्हें 1972 में पद्मश्री और 2011 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। 2023 में, उन्हें भारतीय सिनेमा के सर्वोच्च सम्मान दादा साहब फाल्के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। वहीदा रहमान आज भी भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक अनमोल विरासत बनी हुई हैं।